श्याम सुन्दर दीप्ति

एक अटैची जिंदगी

ई—मेल-drdeeptiss@gmail.com

रेशमा ने ब्रीफकेस उठाया और अलमारी के सामने खड़ी हो गयी। अलमारी खोली तो वो पूरी भरी हुई थी, अनेकों ही सूट, साड़ियां, जींस-पैंट, कुर्ते। उन्हें दो सूट ले जाने थे. उसने सोच रखा था, कम से कम, आवश्यक सामान ले जाने के लिए। वह किसी यात्रा पर नहीं जा रही थी. वह शहर की एक संस्था के 'आनंदवास' नामक आवासीय भवन में रहने जा रही थी.

वह जिंदगी के अंतिम चरण से गुजर रही थी. भरा पूरा परिवार था. एक बेटा, एक बेटी और अन्य रिश्तेदार। लेकिन जीवन साथी के बाद अकेले रहना भी तो वही जानता है जो अकेला होता है।

बच्चे अपनी-अपनी जगह पर. रेशमां की आदत रही है, फितरत कहो, सबको अपनी जिन्दगी जीने दो और आप खुद भी। बच्चे समय-समय पर मिल जाते और कई बार साथ ले जाने को कहने की बात कहते, पर अब सब कुछ ठीक था।

वह अलमारी के सामने खड़ी होकर कपड़े देख रही थी। उसके मन में विचार चल रहे थे. मुझे यह सूट मेरे मिलन दिनभर पर और दूसरा मेरे मेरे विवाह की पचासवें वर्षगांठ पर मिला। यह सूट बेटी ने अपनी पहली सैलरी पर दिया था। ...उसने ब्रीफकेस में दो सूट रखे। तरह-तरह के सूट, अजीब-अजीब से, नौकरी के लिए, पार्टी के लिए, घर के लिए, किसी भी अवसर के लिए...

वह अब क्रॉकरी की अलमारी के सामने थी। अनेक प्रकार के कपों में से, जो दो कप उसे सबसे अधिक पसंद थे, वे वही थे जो उसने खरीदे थे। दोनों इन्हीं कपों में चाय पीते थे. उन कपों में कभी किसी और को चाय नहीं दी गई। वह काफी देर तक एक कोने में पड़े रहे। उसने दोनों कप ले लिये। हालाँकि एक कप की जरूरत थी. ऐसा नहीं कि दो होने चाहिए, यह भी नहीं, कि कभी न कभी एक टूट जाता है। नहीं, क्योंकि उनसे कुछ भावनाएँ जुड़ी होती हैं। इसे चुनाव घरने ज्यादा समय नहीं लगा.

हालाँकि, वह 'आनंदवासश्'की व्यवस्था देख के आई थी। वहाँ एक अच्छा कमरा था, खाने-पीने और रहने की सारी सुविधाएँ थीं, जो वह चाहती थीं। यूं, इस सामान की जरूरत नहीं थी.

कपों को उचित स्थान व सुरक्षित ब्रीफकेस में रखने के बाद, वह दूसरी अलमारी के सामने थी। जहाँ से वह खुद कभी-कभार उपहार या सजावटी वस्तुएँ खरीदती थी। उनकी नज़र एक श्फ्लावर पॉटश् पर पड़ी। यह उन्हें एक सेवानिवृत्ति पार्टी में मिला। उसका हाथ उसके पास गया, यह कमरे के एक कोने में पड़ा रहेगा, इसलिए यह उस जगह से जुड़ी यादों से जुड़ी रहेगी। वह स्थान जहाँ से उसने आत्म निर्भर जीवन की शुरुआत की।

उसने अपने कमरे में देखा. एक कोने पर कुछ किताबें थीं. उन्हें कॉलेज के दिनों से ही किताबों का शौक रहा है। उन्होंने पुस्तक को एक मार्गदर्शक के रूप में समझा, एक अच्छे मित्र के रूप में भी। उन्होंने एक किताब 'लस्ट फॉर लाइफ' उठाई, जो उनके बेटे ने उसें उपहार में दी थी।

अटैची पर एक नजर डाल, वह एक कुर्सी पर बैठ गयी. वह अपनी आंखों के सामने अपनी दैनिक दिनचर्या निहारती रही, सुबह उठने से लेकर बाथरूम जाने, स्नान करने और सोने से पहले तक।

'सा रे गा मा' के चुनिंदा गानों का रेडियो भी, उस के पास था, जो उसे उसकी बहन ने दिया था। जिसे उस के स्वभाव और गीतों के प्रति जानकारी थी।

आनंदवास में रहने का निर्णय भी, उसकी आत्मनिर्भरता का अगला चरण था। उसने इमारत को देखा, सुविधाओं की जाँच की और फिर इसके बारे में निर्णय लेने के लिए प्रबंधक के पास आई। निर्णय का मुख्य आधार उन सुविधाओं की लागत जानना।

जब उन्हें पता चला कि यह सब उसकी पेंशन के अंतर्गत आता है तो उसने एक मिनट भी नहीं सोचा। बात अंतिम चरण को चहकते-मुस्कराते पार करने की है। और क्या चाहिए? साथ ही जब वे सुबह से शाम तक की जिम्मेदारी उठा रहे होते है। रात में जिम्मेदारी लेना मुश्किल होता है, वे इसका ख्याल भी रख रहे हैं, तो कुछ रखकर क्या करना, बचत किसके लिए करनी है?

ब्रीफकेस तैयार करके बैठ गई कि सुबह आनंदवास चलूंगी।

अटैची पड़ी हुई थी, अपने आखिरी कुछ पलों में वो उस घर में लेटी हुई थी। पूरा घर उसकी आँखों के सामने था, चारों ओर, और ले जाने के लिए एक ब्रीफकेस, बस।

उसके सारे विचार अटैची पर जा रहे थे. बस इतना ही सामान है. ब्रीफकेस में सिर्फ कपड़े, कप या एक आध उपहार ही नहीं था, यह और भी बहुत कुछ था। यादें थीं, प्यार था, अहसास था। यह अटैची इस कमरे, इस घर से भी कहीं बड़ी लग रही थी।

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति : पंजाबी लघुकथा के मुख्य लेखक हैं। अब तक इनके पंजाबी में आठ और हिंदी में तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा पांच दर्जन से अधिक कहानियां, कविताएं, निबंध और ज्ञानवर्धक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पंजाबी में 33 और हिंदी में 4 लघुकथा संग्रहों का संपादन करने के अलावा इन्होंने कई पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। जिसके कारण उन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं और लघुकथाओं का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। इन्होंने वर्ष 1988 में श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल के साथ मिलकर पंजाबी लघुकथा की त्रैमासिक पत्रिका 'मिन्नी' का प्रकाशन आरंभ किया जो अनवरत जारी है।